21/ 01 / 80 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

विधि पूर्वक बाप को
प्रत्यक्ष करने की अनुभूति

➢➢ मैं आत्मा संगमयुग पर स्वयं को परमात्म ज्ञान के प्रत्यक्ष स्वरूप अर्थात प्रैक्टिकल डबल रूप - एक माया प्रूफ दूसरा श्रेष्ठ जीवन, ब्राह्मण जीवन, ऊंचे से ऊँचे अलौकिक जीवन, ईश्वरीय जीवन को देख रही हूँ। श्रेष्ठ ज्ञान का प्रूफ है - मेरा ये "श्रेष्ठ जीवन"।

➳ _ ➳ मेरा ये श्रेष्ठ जीवन औरों के लिए प्रत्यक्ष प्रूफ बनता जा रहा परमात्म ज्ञान को निश्चय करने के लिए।

→ मेरा ये श्रेष्ठ जीवन असंभव से संभव होने वाली बातें परमात्म ज्ञान का प्रत्यक्ष प्रमाण बनती जा रही है जो आज तक कोई भी आत्म ज्ञानी महान आत्मायें कर न सकी, बना न सकी।

→ सबसे बड़ी असंभव भी सम्भव होती जा रही है वो है - "प्रवृति में रहते पर-वृति में रहने की"।

- मेरा ये जीवन पुरानी वृत्तियों से परे अर्थात न्यारी होती जा रही है।
- देह को देखते हुए भी वृति में आत्मा रूप ही दिखाई दे रही है। लौकिक संबंध होते भी भाई भाई की ही दृष्टि-वृति बनती जा रही है।
- प्रवृति में रहते भी मेरा ये सम्पूर्ण पवित्र जीवन "परमात्म ज्ञान के प्रूफ" के रूप में परिलक्षित होता जा रहा है।
- जिसे महान आत्मायें असंभव समझती है वो मुझ परमात्म ज्ञानी के लिए अति सहज अनुभव हो रहा है।

➳ _ ➳ मेरा ये अधिकारी जीवन अर्थात बाप के खजानों से भरपूर जीवन, प्रैक्टिकल अनुभवी जीवन भी विशेष परमात्म ज्ञान का प्रमाण अर्थात प्रूफ के रूप में दिखाई दे रहा है।

→ बाप के संबंध का प्रूफ अविनाशी वर्से के रूप में विशेष मेरे जीवन मे दिखाई दे रहा है।

- परमात्म ज्ञान का सहज प्रूफ अपने जीवन मे वर्से की प्राप्ति को बहुत गहराई से अनुभव कर रही हूँ।
- यह अविनाशी ज्ञान, प्राप्ति का प्रूफ जीवन में वर्से के रूप में परमात्मा को प्रत्यक्ष कर रही है - इस विशेष प्रत्यक्ष प्रमाण का मैं सहज ही अनुभव कर रही हूँ।

➢➢ संगमयुग की जो विशेषता है एक कदम उठाओ और हजार कदम प्रालब्ध में पाओ। जिसमे पुरुषार्थ और प्रालब्ध साथ साथ है - इसे मैं अपने इस संगमयुगी पुरुषार्थी जीवन मे बहुत अच्छे से अनुभव करती जा रही हूँ।

➳ _ ➳ मैं देख रही हूँ मेरे भाग्य की लकीर स्वयं भाग्य विधाता बाप अभी ही खींच रहे है ब्रह्मा बाप द्वारा।

→ सतयुगी प्रालब्ध से भी विशेष बाप की प्राप्ति के प्रालब्ध की गहरी अनुभूति कर रही हूँ।

- मैं अपने प्रलब्धि रूप को देख रही हूँ।
- प्रालब्ध को देखकर सहज ही चढ़ती कला का अनुभव हो रहा है।
- मैं संगमयुगी विशेषताओं की स्मृति स्वरूप विशेष आत्मा बनती जा रही हूँ।
- मेरे दिल में बस यही गीत बज रहे है - "पाना था सो पा लिया" और इस प्राप्ति की खुशी में मन मयूर नाच रहा है।